International Journal of Arts & Education Research

आम जन के लिए राम द्वारा संकटनिवारक आचरण का अध्ययन

कामाख्या नारायण सिंह*[1], प्रेम कुमार तिवारी[2]

[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़, राजस्थान।

[2]मार्गदर्शक, सहायक आचार्य, दयाल सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

सारांश

जीवन और जगत् के लिए रामचरितमानस की उपयोगिता नाना प्रकार से स्वीकृत रही है। इस सिलसिले में "आमजन के लिए राम के द्वारा संकटनिवारक आचरण का अध्ययन' विषयान्तर्गत मानस और रामकथा पर आधारित प्रमुख हिंदी उपन्यासों की प्रासंगिक व्याख्या इस लेख के केंद्र में रखी गई है।

1. परिचय

राम ने लंका से अयोध्या के लिए वापसी करते समय प्रयाग में स्नान किया और हनुमान को बटु रूप में सज्जित करवाकर भरत की मन:स्थिति समझने और भांपने के लिए अवधपुर भेजा।[1] इसके बाद राम अपनी सेना के साथ निषादराज के यहां गए।[2] तब हनुमान ने वापस आकर राम के लिए भरत के उमड़ते प्रेम का बखान उनसे किया और राम ने भरत का प्रेम भांपकर अयोध्या को ससैन्य प्रस्थान किया।[3]

राम का यह आचरण मानव समाज के लिए जिज्ञासा का विषय होना चाहिए कि राम ने हनुमान को भरत के पास छद्म रूप में क्यों भेजा और वे लंका से ससैन्य वापस क्यों हुए तथा निषादराज से क्यों मिले। इन्ही जिज्ञासाओं का उत्तर लेख में प्रस्तुत करना अभीष्ट है। राम का यह आचरण अकारण नहीं वरन् सप्रयोजन है। भगवानशरण भारद्वाजविरचित 'रामचरितमानस और आधुनिक जीवन की समस्याएं' पुस्तक में दिखाया गया है[4] कि समस्त मुगल इतिहास पिता के विरुद्ध पुत्र और पुत्र के विरुद्ध पिता, भाई के विरुद्ध भाई और स्वामी के विरुद्ध सेवक के विश्वासघाती षड्यंत्र का दस्तावेज है। साहित्यकार समाज का दर्पण होने के साथ-साथ समाज का पथ प्रदर्शक भी स्वीकृत है। अत: मानसकार ने मानव समाज को सचेत किया कि सावधान ! राज्य या संपत्ति के लिए भाई अपने अन्य भाई की हत्या का षड्यंत्र रच सकता है। इसलिए कई वर्षों के वियोग के बाद संपत्ति या राज्य के धारक स्वजन की मनोवृत्ति किसी दूत से भांपवाकर ही उससे मिलने में कुशल है। सेना या रक्षक और राजकीय सहायता लेकर ही अपनी संपत्ति के रखवाले स्वजन का साम्मुख्य करने में हित है।

सारांश यह कि राम ने अपने संकटमोचक आचरण से जनता को संदेश दिया कि तुम लोग अपनी संपत्ति के धारक स्वजनों से कई वर्षों के बाद मिलने से पूर्व रक्षक और राज सहायता का इंतजाम कर लो, तभी तुम्हारी कुशल है। अन्यथा तुम्हारी हत्या भी की जा सकती है। मैं (राम) तो बच गया - ब्रह्म होने के कारण, लेकिन तुम साधारण जीव अपने आत्मीय जन की लोलुपता से मौत के घाट उतार दिए जा सकते हो। अत: उनका साम्मुख्य करने से पहले अपनी रक्षा का पूर्वोपाय मेरी तरह कर लो।

यह संदर्भ 'वयं रक्षाम:' में अनुल्लिखित है। गुरुदत्तकृत 'अग्निपरीक्षा' में इस प्रसंग की प्रस्तुति की गई है। मदनमोहन शर्माकृत 'लंकेश्वर' में भी इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है। नरेंद्र कोहलीरचित 'अभ्युदय (2)' में भी यह प्रसंग छोड़ दिया गया है। भगवान सिंहकृत' 'अपने अपने राम' और श्यामलाल राहीसृजित 'जल समाधि' में यह प्रसंग अनुपस्थित है। भगवतीशरण मिश्रकृत 'मैं राम बोल रहा हूं' में यह प्रसंग उल्लिखित है। रामानंद के उपन्यास 'रामगाथा' में इस प्रसंग की रोचक एवं उपयोगी चर्चा की गई है।

प्रस्तुत लेख में आम जन के लिए राम द्वारा संकट निवारक आचरण किए जाने का अध्ययन किया गया है।

2. परिकल्पना

इस लेख में परिकल्पना का शीर्षक है - आम जन के लिए राम द्वारा संकटनिवारक आचरण का पाठ पढ़ाया गया है।

3. प्रमाणों की सप्रसंग व्याख्या

रामकथा पर आधारित केवल तीन प्रमुख हिंदी उपन्यासों में यह प्रसंग उपलब्ध है। 1974 ई. में गुरुदत्तकृत 'अग्नि परीक्षा' उपन्यास के अनुसार हनुमान को अयोध्या में भरत को राम के आने की सूचना देने भेज दिया गया। वहां नंदीग्राम में हनुमान ने भरत के सम्मुख अगले दिन राम के आने का समाचार सुनाया और उनको (भरत को) प्रसन्न्ता से कूदते देखा।[5] इसके अगले दिन पुष्पक विमान में बैठे हुए सीता, राम, लक्ष्मण ससैन्य अयोध्या में उतरे।[6]

यहां अनुमान किया जा सकता है कि राम के आगमन की सूचना पाकर हर्षित भरत को हनुमान ने राम के अनुकूल भांपा होगा। भरत की अपने प्रति अनुकूलता अनुभव करके ही राम अयोध्या में पधारे और सैन्य प्रयोग की आवश्यकता वहां मुगलकालीन सत्ता संघर्ष की तरह महसूस नहीं हुई। आमजन के लिए यहां मानसकार की भांति सबक दिया गया है कि अपनी सुरक्षा का पूर्वोपाय करके ही अपनी संपत्ति के धारक स्वजन का वर्षों बाद साम्मुख्य करने में कुशलता है। इससे मानस की भांति 'अग्नि परीक्षा" में भी राम द्वारा आम जन को

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

संकट निवारक आचरण का पाठ पढ़ाने की पुष्टि होती है।

2010 ई. में प्रकाशित भगवतीशरण मिश्र के उपन्यास 'मैं राम बोल रहा हूं' के अनुसार पुष्पक विमान में सीता, राम, लक्ष्मण, विभीषण के साथ वानर सेना भी थी और श्रृंग्बेरपुर में गुह (निषादराज) भी उस पर आसीन हो गए। पवनसुत उतर कर भरत को सूचना देने गये।[7]

इस विवरण से अनुमान किया जा सकता है कि मानस की भांति उक्त आलोच्य उपन्यास में भी राम अपनी सुरक्षा का पूर्वोपाय करके वर्षों बाद धरोहर के रखवाले भरत से मिलने आए। हनुमान ने भरत के पास से लौटकर राम को भरत की उनके (राम के) प्रति अनुकूलता की ही सूचना दी होगी जिसकी पुष्टि इस वाक्य से होती है – 'सर्वप्रथम भाई भरत ने ही मुझे और जानकी को सिंहासनारूढ़ किया।[8]

इससे मानस की भांति 'मैं राम बोल रहा हूं' में भी आम जन के लिए राम द्वारा संकटनिवारक आचरण किए जाने का सबक ध्वनित है।

2010 ई. में रमानाथ त्रिपाठी के प्रकाशित उपन्यास 'रामगाथा' में इस प्रसंग का अभिधात्मक उल्लेख है कि राम ने हनुमान को अयोध्या में अपने आगमन का समाचार भरत को सुनाने तथा इसे सुनकर उनके मुख पर आए भावों को परखने के लिए भेजा। इससे आगे लिखा है कि यदि भरत की इच्छा राज करने की हो तो राम वन में ही रह जाएंगे।[9]

यहां बिल्कुल स्पष्ट है कि भरत यदि राज्य के इच्छुक हों तो राम उनसे दूर रहेंगे। क्योंकि दूर रहने में ही प्राण की रक्षा संभव है। सत्तालोलुप व्यक्ति अपने प्रतिद्वंद्वी की हत्या करवा देता है। मनुष्य की इस प्रवृत्ति से विज्ञ राम ने आम जन को ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर अपने प्राण बचाने की कला सिखाई है।

अब प्रश्न है कि मानसकार ने बटु रूप में हनुमान को भरत से मिलने क्यों भेजा। हनुमान-भरत का प्रथम मिलन युद्ध समापन के बाद नंदिग्राम में होता है (अग्नि परीक्षा, पृ. 215, रामगाथा, पृ. 172) जबकि 'मैं राम बोल रहा हूं' (पृ. 611) में इनका प्रथम मिलन औषधि लाने के दौरान होता है और दूसरा मिलन युद्ध के बाद होता है (पृ. 638)। इस प्रकार हनुमान और भरत का दुबारा मिलन मानस और 'मैं राम बोल रहा हूं' में होता है। मानस में छद्म रूप से हनुमान भरत से युद्ध के बाद मिलते हैं जबकि 'मैं राम बोल रहा हूं' में छद्मरूप में वे भरत से नहीं मिलते। ऐसा क्यों?

मानस यहां तीनों उपन्यासों से बाजी मार ले गया है। हनुमान भरत से पूर्व परिचित वेश में मिलते तो शायद भरत 'मुंह में राम बगल में छुरी' अथवा 'हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और होते हैं' के भाव की तरह दिखावटी आचरण करते जिससे उनका असली

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

मंतव्य हनुमान नहीं भांप सकते थे। अत: भरत से दुबारा मिलने के लिए हनुमान इस बार छद्म रूप धारण करते हैं, उनका ठवकल स्ंदहनंहम पढ़ते हैं, उनसे संवाद करते हैं और उनके रामानुकूल होने का अनुमान राम से बाद में बयान करते हैं। भरत के राम के प्रति असली मनोभाव को पकड़ने में सफल होने के लिए छद्म रूप में हनुमान भरत से मानस में मिलते हैं, अर्थात् हनुमान राम के लिए आधुनिक सी.आई.डी. हैं जो अवध के रखवाले भरत के राम के प्रति विद्यमान मनोभाव की असलियत की टोह लगाने में सफल रहे हैं। आम जन के लिए उपयोगी ऐसा सबक उपर्युक्त तीनों प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में नहीं ध्वनित किए जाने से इस प्रसंग पर मानसकार का कलम तोड़ देना प्रमाणित है।

निष्कर्ष : उपर्युक्त अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि आम जन के लिए राम ने संकटनिवारक आचरण का पाठ पढ़ाया है।

संदर्भ

क्र.सं.	**लेखक का नाम**	**पुस्तक का नाम**	**प्रकाशन का नाम**	**प्रकाशन वर्ष (ई.सन्)**	**पृष्ठ सं.**
1	गोस्वामी तुलसीदास	रामचरितमानस (मूल गुटका)	गीता प्रेस, गोरखपुर	1955	579
2	वही	वही	वही	वही	580
3	वही	वही	वही	वही	586-87
4	भगवानशरण भारद्वाज	रामचरितमानस और आधुनिक जीवन की समस्याएं	लोकवाणी संस्थान दिल्ली	2004	55
5	गुरुदत्त	अग्निपरीक्षा	हिंदी साहित्य सदन, न. दि.	1974	215
6	वही	वही	वही	वही	216
7	भगवतीशरण मिश्र	मैं राम बोल रहा हूं	प्रकाशन संस्थान, न. दि.	2010	638
8	वही	वही	वही	वही	639
9	रमानाथ त्रिपाठी	रामगाथा	राजपाल एंडसंज, दिल्ली	2010	171

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.